नामयज्ञ

वन्दना

वन्देऽहं श्रीगुरोः श्रीयुतपद-कमलं
श्रीगुरून् वैष्णवांश्च ।
श्रीरूपं साग्रजातं सहगण-
रघुनाथान्वितं सजीवम् ।
साद्वैतं सावधूतं परिजनसहितं
कृष्णचैतन्यदेवम् ।
श्रीराधाकृष्णपादान् सहगणललितान्
श्रीविशाखान्वितांश्च ।

१

सिन्धुड़ा-मध्य दशकुशी

कलि-तिमिराकुल अखिल लोक देखि
वदन चाँद परकाश ।
लोचने प्रेम सुधारस बरखिये
जगजन-ताप-विनाश ।
गौर करुणासिंधु अवतार ।
निजनाम गाँथिया नाम चिन्तामणि
जगते परायल हार ।
भकत-कल्पतरु अन्तरे अन्तरु
रोपये ठामहि ठाम ।

तछु पदतले अवलम्बन पथिक
पूजये निज निज काम।
भाव गजेन्द्र चड़ायल अकिञ्चने
ऐछन पहुँक-विलास।
संसार कालकूट विषे दगधल
एकलि गोविन्द दास॥

२

जय जय श्रीगुरु प्रेम कल्पतरु,
अद्भुत जाँक प्रकाश।
हिय अगेयान तिमिर वरज्ञान
सुचन्द्र किरणे करु नाश॥

इह लोचन आनन्दधाम।
अयाचित एहेन पतित हेरि जो पहुँ,
याचि देहल हरिनाम॥

दुरगति अगति अगति-मति-जो जन,
नाहि सुकृति-लवलेश।
श्रीवृन्दावन युगल-भजन धन,
ताहे करत उपदेश॥

निरमल-गौर-प्रेम-रस-सिञ्चने,
पूरल सब मन - आश।
सो चरणाम्बुजे रति नाहि होयल,
रोवत वैष्णव दास॥

■

मङ्गलाचरण

आजानुलम्बितभुजौ कनकावदातौ,
संकीर्त्तनैकपितरौ कमलायताक्षौ।
विश्वम्भरौ द्विजवरौ युगधर्म्मपालौ,
वन्दे जगत्-प्रियकरौ करुणावतारौ॥

■

प्रणाम-मन्त्र

नमस्ते श्रीजगन्नाथाय गौराङ्गाय नमो नमः।
नमस्ते खोल-करतालाय नमः कीर्त्तनमण्डली॥
मृदङ्ग-ब्रह्मरूपाय लावनं रसमाधुरी।
सहस्रगुण - सहयुक्त - मृदङ्गाय नमो नमः॥

●

श्रीगौरचन्द्रिका

१

(एसो) गौरचन्द्र गौर हरि
एक बार दया कोरे
आसते हबे (गौर)
एक बार आसते हबे
दया कोरे एक बार आसते हबे।
(तोमाय) भजन-हीन काङ्गाले डाके

(तोमाय) दीन हीन काङ्गाले डाके
आसते हबे हे ।
(ओहे) संकीर्त्तनेर गुरु आमार (तोमाय··· ····)
(एइ) महानाम-संकीर्त्तने आसते हबे हे
(तोमार) साङ्गोपाङ्ग सङ्गे निये आसते हबे हे
भालो साजे ना साजे ना
तोमा नइले कीर्त्तन (भालो) साजे ना साजे ना ।
भालो साजे ना साजे ना
मातो आरा गौर बिने नाम
(आमार) प्राण गोराचाँद बिने नाम
(आमार) प्राणाराम गौराङ्ग बिने नाम
एसो हे एसो हे
(तोमार) भाई निताइ के सङ्गे निये
प्रिय गदाधर के सङ्गे निये
श्रीवास अङ्गनेर मतो
एसो हे ऐसो हे, एसो हे, एसो हे ।
गौर एसो हे, निताई एसो हे, आमार गौर एसो हे ।

२

ऐसो दुटि भाई गौर निताई (२)
द्विजमणि द्विजराज हे । (२)
पूजिबो चरण एइ आकिञ्चन
राखिबो हृदयमाझे हे । (२)
पूजा करिबो
गौर तोमार अभय चरण (आमि) पूजा करिबो ।
अश्रुबिन्दु अर्घ्य दिये पूजा करिबो ।

भक्ति चन्दन तुलसी दिये पूजा करिबो ।
पुष्प चन्दन तुलसी दिये पूजा करिबो ।
एसो हे गौर, एसो हे गौर,
तोमार कीर्त्तन तुमि करो, एसो हे गौर ।
गौर एसो हे
गौर एसो हे·····गौर एसो हे·····गौर एसो हे,
गौर एसो हे ।
गौर एसो हे·····गौर एसो हे·····गौर एसो हे ।
गौर एसो हे, एसो हे ।
आमार एइ आसरे (गौर) एसो हे एसो हे ।
तुमि आसिले आनन्द हबे, एसो हे एसो हे ।
भाई निताइके सङ्गे निये एसो हे एसो हे,
साङ्गोपाङ्ग सङ्गे निये एसो हे एसो हे ।
भक्तवृन्द सङ्गे निये एसो हे एसो हे ।
दयाल ठाकुर दया कोरे एसो हे एसो हे
एक बार दया कोरे ठाकुर आमार एसो हे एसो हे
एइ संकीर्त्तनेर माझे (गौर) एसो हे एसो हे ।
कीर्त्तन नाटोया गौर एसो हे एसो हे
कीर्त्तनिया-शिरोमणि संकीर्त्तनेर पिता गौर
एसो हे एसो हे ।
आसते हबे हे
संकीर्त्तनेर माझे तोमाय आसते हबे हे ।
तुमि ना आसिले (गौर) शोभा हय ना हय ना
शोभे ना शोभे ना ।
तुमि ना आसिले (गौर) शोभे ना शोभे ना
एसो हे एसो हे ।

गदाधरके सङ्गे निये एसो हे एसो हे।
श्रीवास-अङ्गने गौर एसो हे एसो हे।
रूप सनातन सङ्गे गौर एसो हे एसो हे।
गदाधर-प्राण गौर एसो हे एसो हे।
शचीदुलाल गोराचाँद एसो हे एसो हे।
मायेर दुलाल निताइचाँद एसो हे एसो हे।
विष्णुप्रियार जीवनधन (प्राणधन) एसो हे एसो हे।
रूपसनातन-प्राण गौर एसो हे एसो हे।
नदिया-विहारी गौर एसो हे एसो हे।
प्रेमदाता निताइचाँद एसो हे एसो हे।
प्राण गौर नित्यानन्द एसो हे एसो हे।
एसो हे एसो हे।
हरि बोल.....हरि बोल..... हरि बोल

हरि बोल

हरि बोल.....हरि बोल
हरि हरि हरि बोल हरि बोल हरि बोल
हरि बोल हरि बोल
निताइ गौराङ्ग बोल हरि बोल हरि बोल
राधे गोविन्द बोल
हरि बोल.....हरि बोल.....हरि बोल
हरि बोल
हरि बोल.....हरि बोल.....हरि बोल
हरि बोल
हरि बोल.....हरि बोल.....हरि बोल
हरि बोल

हरि बोल.....हरि बोल.....हरि बोल
हरि बोल
हरि बोल हरि बोल

■

अधिवास

धनाश्री—बड़ा दशकुशी

१

एक दिन पहुँ हासि, अद्वैत मन्दिरे आसि,
बसिलेन शचीर कुमार।
नित्यनन्दे करि सङ्गे, अद्वैत बसिया रङ्गे,
महोत्सवेर करिला विचार॥
शुनिया आनन्दे हासि सीता ठाकुराणी आसि,
कहिलेन मधुर वचन।
ता शुनि आनन्द मने, महोत्सवेर विधाने,
कहे किछु शचीर नन्दन॥
शुनो ठाकुराणी सीता, वैष्णव आनिये एथा,
आमन्त्रण करिया यतने।
येबा गाय येबा बाय, आमन्त्रण करि ताय,
पृथक पृथक जने जने॥
एतो बलि गोरा राय, आज्ञा दिलो सबाकाय,
वैष्णव करह आमन्त्रण।
खोल करताल लैया, अगुरु चन्दन दिया,
पूर्णघट करह स्थापन॥

आरोपण करि कला, ताहे बाँधि फूल माला,
कीर्त्तन-मण्डली कुतूहले।
माल्य चन्दन गुया, घृत मधु दधि दिया,
खोल-मङ्गल सन्ध्याकाले॥
शुनिया प्रभुर कथा, प्रीति विधि कैल यथा,
नाना उपहार गन्धवासे।
सदे हरि हरि बोले, खोल-मङ्गल करे,
वृन्दावन दास रस भाषे॥

२

नाना द्रव्य आयोजन, करि करे निमन्त्रण,
कृपा करि कर आगमन।
तोमरा वैष्णवगण, मोर एइ निवेदन,
दृष्टि करि कर समापन॥
करि ऐतो निवेदन, आनिल महान्तगण,
कीर्त्तनेर करे अधिवास।
अनेक भाग्येर बले, वैष्णव आसिया मिले,
काले हबे कीर्त्तन-विलास॥
श्रीकृष्णेर लीलागान, करिबेन आस्वादन,
पूरिबे सभार अभिलाष।
श्रीकृष्णचैतन्य चन्द्र, सकल भकतवृन्द,
गुण गाय वृन्दावन दास॥

३

आगे रम्भा आरोपण, पूर्णघट स्थापन,
आम्रपल्लव सारि सारि॥

द्विज वेदध्वनि करे, नारीगण ज-जकारे,
आर सबे बले हरि हरि॥
दधि घृत मङ्गल, करि सबे उतरोल,
करये आनन्द परकाश।
आनिया वैष्णवगण, दिया माला चन्दन,
कीर्त्तन - मङ्गल अधिवास।
सभार आनन्द मन, वैष्णवेर आगमन,
काले हबे चैतन्य-कीर्त्तन।
श्रीकृष्ण चैतन्य नाम, श्रीनित्यानन्द बास,
गुण गाय दास वृन्दावन॥

४

जय जय नवद्वीप माझ।
गौराङ्ग आज्ञा पाइयाँ ठाकुर अद्वैत जाइयाँ,
करे खोल मङ्गलेर साज॥
आनिया वैष्णव सब, हरि बोल कलरव,
महोत्सवेर करे अधिवास।
आपनि निताइ धन, देइ माला - चन्दन,
करे प्रिय वैष्णव सम्भाष॥
गोविन्द मृदङ्ग लैया, ता ता थैया थैया,
करताले अद्वैत चपल।
हरिदास करे गान, श्रीवास धरये तान,
नाचे गोरा कीर्त्तन मङ्गल॥
चौदिके वैष्णवगण, हरि बोल घने घन,
काले हबे कीर्त्तन-महोत्सव।

आजि खोल-मङ्गली राखिया आनन्द करि,
वंशी बले, देह जय सब ॥

●

श्रीगौरांग की दुपरिया भोग आरती

भजो पतित उद्धारण श्रीगौर हरि ।
श्रीगौर हरि, नवद्वीप विहारी,
जय जय दीन दयामय हितकारी ॥ (जय जय)
शुनो शुनो शचीसुत, करो अवधान ।
भोग मन्दिरे प्रभु करह पयान ॥ (जय जय)
वामेते अद्वैत प्रभु, दक्षिणे निताइ ।
मध्य आसने बैसेन चैतन्य गोसाई ॥ (जय जय)
अद्वैत घरणी आर शान्तिपुर नारी ।
(आनन्देर आर सीमा नाइ रे)
हुलु हुलु देइ सबे गोरामुख हेरि ॥ (जय जय)
चौषट्टि मोहान्त आर द्वादश गोपाल,
छय चक्रवर्त्ती आर अष्ट कविराज । (जय जय)
शाक शुकुता आदि नाना उपचार ॥
आनन्दे भोजन करेन शचीर कुमार । (जय जय)
दधि दुग्ध घृत छाना आर लुचि पुरी;
आनन्दे भोजन करेन नदीया-विहारी ॥ (जय जय)
भोजन करिया प्रभु कैलो आचमन ।
सुवर्ण खड़िकाय कैलो दन्तेर शोधन ॥ (जय जय)
बसिते आसन दिला रत्न सिंहासने ।
कर्पूर ताम्बूल योगाय प्रिय भक्तगणे ॥ (जय जय)

फूलेर चौआरी घर फूलेर केयारी ।
फूलेर रत्न सिंहासन चाँदोवा मशारी ॥ (जय जय)
फूलेर मन्दिरे प्रभु करिला शयन ।
गोविन्द दास करे पाद-सम्वाहन ॥ (जय जय)
फूलेर पापड़ी प्रभुर उड़े पड़े गाय ।
तार माझे महाप्रभु सुखे निद्रा याय ॥ (जय जय)
श्रीकृष्णचैतन्य प्रभुर दासेर अनुदास ।
सेवा अभिलाष मागे नरोत्तम दास ॥

●

नगर भ्रमण के बाद

नगर भ्रमण करि गौर एलो घरे ।
गौर एलो घरे आमार, निताइ एलो घरे ॥
संकीर्त्तन करिये प्रभु नगरे नगरे ।
(अमनि) धेये गिये शचीमाता गौर निलो कोले ।
नेतेर अञ्चल दिये धूलि झाड़ि दिलो ।
लक्ष लक्ष चुम्बन दिलो बदन कमले ॥

●

दधि मङ्गल

महा महा महोत्सव सम्पूर्ण कारण ।
दधि-मङ्गल आनाइलेन श्रीशची-नन्दन ॥
गौरीदास कीर्त्तनियार करेते धरिया ।
कहिछेन महाप्रभु कान्दिया कान्दिया ॥

गोलोकेर सम्पद हरिनाम संकीर्त्तन।
कैमने बिदाय दिबो मोहान्तेर गण॥
ऐतो शुनि नित्यानन्द आइला धाइया।
भूमिते फेलिलो भाण्ड आछाड़ मारिया॥
द्वादश गोपाल गैलो आपन भवन।
चौषट्टि मोहान्त गैलो निज निकेतन॥
नित्यानन्द चलि गैलो आपनार वास।
भूमिते पड़िया कान्दे नरोत्तम दास॥

■

विभिन्न कीर्त्तन

१

हरि हरये नमः कृष्ण यादवाय नमः।
यादवाय माधवाय केशवाय नमः॥
गोपाल गोविन्दराम श्रीमधुसूदन।
गिरिधारी गोपीनाथ मदनमोहन॥
नमः श्रीचैतन्य नित्यानन्द अद्वैत सीता।
हरि गुरु वैष्णव भागवत गीता॥
जय रूप सनातन भट्ट रघुनाथ।
श्रीजीव गोपाल भट्ट दास रघुनाथ॥
एइ छय गोसाईयेर करि चरण वन्दन।
याहा हइते विघ्ननाश अभीष्ट पूरण॥
एक छय गोसाईं यार तार मुइ दास।
ता सबार पदरेणु मोर पञ्च ग्रास॥

तादेर चरण सेवि भक्तसने वास।
जनमे जनमे होक एइ अभिलाष॥
एइ छय गोसाईं यबे व्रजे कैला वास।
श्रीराधाकृष्णेर नित्यलीला करिला प्रकाश॥
(मनेर) आनन्दे बलो हरि, भजो वृन्दावन।
श्रीगुरु वैष्णवपदे मजाइया मन।
श्रीगुरु वैष्णव पादपद्म करि आश।
नाम सकीर्त्तन गाहे नरोत्तम दास॥

■

२

(जय) राधे गोविन्द राधे गोविन्द राधे गोविन्द राधे। २
(जय) राधे राधे गोविन्द जय।
(जय) गोपाल जय गोविन्द जय॥
राधे राधे राधे गोविन्द जय।
(जय) राधे श्रीराधे जय।
राधे राधे गोविन्द जय।
राधे गोविन्द राधे॥
(जय) राधे राधे गोविन्द जय।
गोपाल जय गोविन्द जय।
राधे राधे राधे गोविन्द जय॥
(जय) राधे गोविंद राधे गोविंद राधे गोविन्द राधे। २
राधे राधे गोविंद जय।
(जय) राधे राधे गोविंद जय॥

जय राधे जय राधे जय राधे जय राधे।
(जय) राधे राधे गोविन्द जय।
(जय) राधे राधे राधे राधे गोविन्द जय।
(जय) राधे राधे राधे राधे गोविन्द जय॥

■

३

धरो लओ धरो लओ लओ रे किशोरीर प्रेम
निताइ डाके आय।

निताइ डाके आय आय गौर डाके आय।
(प्रेमे) शान्तिपुर डुबुडुबु नदे भैसे याय॥
धरो लओ धरो लओ···

(प्रेम) कलसे कलसे ढाले तबु ना फुराय।
(प्रेम) पार भाङ्गिये ढेउ लागिलो गोरा चंदिर गाय॥
धरो लओ धरो लओ——

(प्रेम) नित्यानन्द गौरचन्द्र आपनि बिलाय।
(प्रेम) ये यतो चाय से ततो पाय तबु ना फुराय॥
धरो लओ धरो लओ—

■

४

गौर हरि बोल हरि हरि बोल।
हरि बोल हरि बोल हरि बोल हरि बोल।
हरि हरि बोल।
(आमार) गौर हरि बोल।
गौर हरि बोल।
(आमार) निताइ चाँदेर बोल।
निताइ चाँदेर बोल
(आमार) अद्वैतेर बोल।
अद्वैतेर बोल।
(आमार) गदाधरेर बोल।
गदाधरेर बोल।
(आमार) शचीमातार बोल।
शचीमातार बोल।
(आमार) श्रीनिवासेर बोल।
बोल हरि बोल गौर हरि बोल।
गौर हरि बोल हरि हरि बोल॥

■

जय-ध्वनि

प्रेम से कहो श्रीराधे कृष्ण,
बलिओ प्रभु नित्ताइ चैतन्य
अद्वैत श्रीराधारानी की जय !
श्रीराधागोविन्द की जय !
श्रीराधा-मदन-मोहन की जय !
श्रीराधागोपीनाथजी की जय !
श्रीराधाश्यामसुन्दर की जय !
श्रीराधारमण की जय ! श्रीहरिनाम संकीर्त्तन की जय !
दाता-भोक्ता की जय ! श्रोता-वक्ता की जय !
चारि धाम की जय ! गौरमहल की जय !

■